आधुनिक (वर्तमान) परिप्रेक्ष्य में भारतीय नाटक व संगीत

डॉ. आरती श्योकन्द

भारत में नाट्य मीमांसा की सुदीर्घ परम्परा रही है। आचार्य भरत का नाट्यशास्त्र भारत की सर्वसम्पन्नता का अक्षय–आलोक तो है ही, साथ ही विश्व के नाट्याचार्यो के लिये आज भी वह ईर्ष्या बना हुआ है, परन्तु युग–परिवर्तन के साथ नाट्य–चिन्तन में भी कई परिवर्तन व परिवर्धन हुये हैं। परिवर्तित लोकमानस की उपेक्षा करना रंगकर्मियो के लिये सम्भव नहीं हैं, वैसा करना वांछनीय भी नहीं है। तात्पर्य यह है कि आदि नाट्यशास्त्र ही महत्ता को स्वीकार करने के साथ की नये नाट्यालोचन की आवश्यकता पड़ती गयी, क्योंकि अत्याधुनिक रंगकर्म की समीक्षा केवल प्राचीन मानदण्डों के आधार पर किसी भी रूप में सम्भव नहीं है और परम्पराओं के परिज्ञान के बिना आधुनिकता का विश्लेषण भी सम्यक ढंग से नहीं किया जा सकता अर्थात कहने का तात्पर्य है कि आधुनिक नाट्यलोचन के लिए वर्तमान युग और नव्य रंगशिल्प के परिचय के साथ–साथ सम्पूर्ण प्राचीन जीवनधारा सुदीर्घ नाट्य परम्परा से भी परिचित रहने की आवश्यकता है। अतः आज आवश्यकता है आदि नाट्यशास्त्र के और भी अधिक अध्ययन की, चिन्तन की और उसके मनन की तथा दोनों में समन्वय स्थापित करने की और तभी 'नव्य–नाट्यालोचन' की सही आदर्श स्थापित किया जा सकता है।